www.prepp.in

Prepp
Your Personal Exams Guide

2006

संस्कृत साहित्य

प्रश्नपत्र-II

SANSKRIT LITERATURE

Paper-II

निर्धारित समय : तीन घण्टे] *[पूर्णांक : 200*

Time allowed : Three Hours] *[Maximum Marks : 200*

नोट : (i) *अभ्यर्थी प्रश्न संख्या 1 और 8 अवश्य करें और शेष में से प्रत्येक खण्ड से **एक** प्रश्न का चयन करते हुए **तीन** प्रश्न करें ।*

(ii) *प्रत्येक प्रश्न के लिए निर्धारित अङ्क उसके सामने अंकित हैं ।*

Note : (i) *Candidates should attempt Question Nos. **1** and **8** and not more than **three** of the remaining questions selecting **one** question from each Section.*

(ii) *Marks carried by each question are indicated at its end.*

खण्ड – क

SECTION – A

1. (i) निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संस्कृत में व्याख्या कीजिए : 25

Explain in Sanskrit any **two** of the following prose passages :

(क) इयं हि खड्गमण्डलोत्पलवनविभ्रमभ्रमरी लक्ष्मी: क्षीरसागरात्पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादेकान्तवक्रताम् , उच्चै:श्रवसश्चञ्चलताम् , कालकूटान्मोहनशक्तिम् , मदिराया मदम्, कौस्तुभमणेर्नैष्ठुर्यम् , इत्येतानि सहवासपरिचयवशाद्विरहविनोदचिह्नानि गृहीत्वैवोद्गता । न ह्येवंविधमपरिचितमिह जगति किंचिदस्ति यथेयमनार्या ।

(ख) अद्य तु तत्तीर्थस्य नामापि केनापि न स्मर्यते; परं तत्समये तु लोकोत्तरं तस्य वैभवमासीत् । तत्र हि महार्ह-वैदूर्य-पद्मराग-माणिक्य-मुक्ताफलादि-जटितानि कपाटानि स्तम्भान् , गृहावग्रहणी:, भित्ती:, वलभी: विटङ्कानि च निर्मथ्य, रत्ननिचयमादाय, शतद्वय-मणसुवर्ण-शृङ्खलावलम्बिनीं चञ्चच्चाकचक्य-चकितीकृतावलोचक-लोचन-निचयां महाघण्टां प्रसह्य सङ्गृह्य, महादेवमूर्तावपि गदामुदतूतुलत् ।

(ग) यस्मिन्ननवरतधर्मकर्मोपदेशशान्तसमस्तव्याधिव्यतिकरा: पुरुषायुषजीविन्य: सकलसंसारसुख-भाज: प्रजा: । तथाहि । कुष्ठयोगो गान्धिकापणेषु , स्फोटप्रवादो वैयाकरणेषु , सन्निपातस्तालेषु, ग्रहसंक्रान्तिर्ज्योति: शास्त्रेषु, भूतविकारवाद: सांख्येषु, क्षयस्तिथिषु, गुल्मवृद्धिर्वनभूमिषु, गलग्रहो मत्स्येषु, गण्डकोत्थानं पर्वतवनभूमिषु, शूलसम्बन्धश्चण्डिकायतनेषु दृश्यते, न प्रजासु ।

www.prepp.in

(ii) सप्रसंग व्याख्या कीजिए :
Explain with reference to the context :

याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।

अथवा / OR

हितं मनोहारि च दुर्लभं वच: ।

खण्ड – ख
SECTION – B

2. निम्नलिखित पद्यों में से किन्हीं **दो** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 40
Translate into Hindi any **two** of the following verses :

(क) यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठ: स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकस:
पीड्यन्ते गृहिण: कथं नु तनयाविश्लेषदु:खैर्नवै: ।।

(ख) एको रस: करुण एव निमित्तभेदा –
द्विभन्न: पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान् ।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारा –
नम्भो यथा, सलिलमेव हि तत्समस्तम् ।।

(ग) एतत्तु मां दहति यद्गृहमस्मदीयं
क्षीणार्थमित्यतिथय: परिवर्जयन्ति ।
संशुष्कसान्द्रमदलेखमिव भ्रमन्त:
कालात्यये मधुकरा: करिण: कपोलम् ।।

3. हिन्दी में सम्यग् व्याख्या कीजिए : 40
Explain fully in Hindi :

(क) सत्यं न मे विभवनाशकृतास्ति चिन्ता
भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति ।
एतत्तु मां दहति नष्टधनाश्रयस्य
यत्सौहृदादपि जना: शिथिली भवन्ति।।

अथवा / OR

वनगमननिवृत्ति: पार्थिवस्यैव ताव-
न्मम पितृपरवत्ता बालभाव: स एव ।
नवनृपतिविमर्शे नास्ति शङ्का प्रजाना-
मथ च न परिभौगैर्वञ्चिता भ्रातरो मे ।।

www.prepp.in

(घ) दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः ।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव ।।

अथवा / OR

अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् ।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते ।।

खण्ड – ग
SECTION – C

4. कार्यावस्थाओं के नाम लिखकर उनके उदाहरण दीजिए । **40**
Name the Karyavasthas and give their examples.

अथवा / OR

महाकाव्य का लक्षण बताकर कुछ प्रमुख महाकाव्यों के नाम बताइये ।
Define Mahakavya and write the names of some important Mahakavyas.

5. किन्हीं **चार** पर टिप्पणी लिखिए : **40**
Write notes on any **four** :
प्रस्तावना, प्रवेशक, नायकभेद, सूत्रधार, जनान्तिक, पताकास्थानक ।

खण्ड – घ
SECTION – D

6. (i) संस्कृत के प्रमुख गीतिकाव्यों का संक्षिप्त परिचय दीजिए । **15**
Give a brief account of important Sanskrit Giti-Kavyas.

(ii) अधोलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : **25**
Write a note on any **one** of the following :
भट्टनारायण, सुबन्धु, त्रिविक्रमभट्ट, माघ

7. (i) संस्कृत नाटकों के उद्भव एवं विकास का विवेचन कीजिए । **15**
Discuss the origin and development of Sanskrit dramas.

(ii) अधोलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : **25**
Write a note on any **one** of the following :
गीतगोविन्दम् , दशकुमारचरितम् , मुद्राराक्षसम् , नैषधीयचरितम्

www.prepp.in

SECTION – E

Prepp
Your Personal Exams Guide

8. निम्नलिखित का संस्कृत में अनुवाद कीजिए : 40

Translate the following into Sanskrit :

श्रीमद्भगवद्गीता संसार के अनेकानेक धर्मग्रन्थों में एक विशेष स्थान रखती है । इसका दिव्य सन्देश किसी जाति, समुदाय अथवा देश विशेष के लिए ही उपादेय नहीं, अपितु इसका अमूल्य उपदेश सार्वभौम है । अपनी-अपनी भावना के अनुसार असंख्य मनुष्यों ने गीता के उपदेशों का अनुसरण कर लोकयात्रा को सुखपूर्वक पूरा किया है । समस्त सिद्धान्तों का जैसा सुन्दर और युक्तियुक्त समन्वय गीता में मिलता है, वैसा अन्य किसी ग्रन्थ में दुर्लभ है । इस ग्रन्थरत्न में मनुष्य के लिए उच्चतम आदर्श का निश्चय किया गया है और साथ ही उसको प्राप्त करने के लिए सुलभ से सुलभ साधन भी बताये गये हैं । गीता पर अनेक भाष्य और टीकाएँ बनी हैं । फिर भी गीता का अध्ययन स्वतन्त्र रूप से कम हुआ है । सिद्धान्त-प्रतिपादन और साम्प्रदायिक दृष्टि से ही उस पर अधिक विचार हुआ है । इसका परिणाम यह हुआ है कि गीता का वास्तविक अर्थ कठिनता से समझ में आता है । महाकवि और उसके उत्कृष्ट काव्य में ऐसी शक्ति होती है कि समाज की प्रगति के साथ उसमें नवीन अर्थ निकाले जाते हैं । फिर गीता जैसे अनुपम ग्रन्थ में समय-समय पर आवश्यकतानुसार अनेक आशय और अर्थ निकाले गये तो कोई नयी बात नहीं है ।

अथवा / OR

मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि-संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं । भाषा विचारों को व्यक्त करती है, पर विचारों से अधिक सम्बन्ध उसके वक्ता के भाव, इच्छा, प्रश्न आदि मनोभावों से रहता है । भाषा किसी न किसी वस्तु के विषय में कुछ कहती है, वह वस्तु चाहे बाह्य भौतिक जगत् की हो अथवा सर्वथा आध्यात्मिक और मानसिक । यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि भाषा एक सामाजिक वस्तु है । भाषा का शरीर प्रधानत: उन व्यक्त ध्वनियों से बना है, जिन्हें वर्ण कहते हैं । इसके अतिरिक्त संकेत, मुख-विकृति और स्वर विकार भी भाषा के अंग माने जाते हैं । स्वर, बल-प्रयोग और उच्चारण का वेग या प्रवाह भी भाषा के विशेष अंग हैं । 'बोली' से अभिप्राय स्थानीय और घरेलू बोली से है, जो तनिक भी साहित्यिक नहीं होती और बोलने वालों के मुख में ही रहती है । 'विभाषा' का क्षेत्र बोली से विस्तृत होता है । एक प्रान्त अथवा उपप्रान्त की बोलचाल तथा साहित्यिक-रचना की भाषा 'विभाषा' कहलाती है । इसे प्रान्तीय भाषा भी कहते हैं । कई विभाषाओं में व्यवहृत होने वाली एक शिष्टपरिगृहीत विभाषा ही 'भाषा' कहलाती है ।